राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला

हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधन और पठनीयता: चुनौतियाँ और अवसर

20 और 21 मार्च 2024

आयोजक

अदिति महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय)
कथा मंच के सहयोग से,
राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान,
संस्कृति मंत्रालय के वित्तीय सहयोग से

आमंत्रण

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि पुस्तकालय समिति और आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ, अदिति महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), कथा मंच के सहयोग से 20 और 21 मार्च 2024 को हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधन और पठनीयता: चुनौतियां और अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सह कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। संगोष्ठी का लक्ष्य उभरती चिंताओं पर चर्चा करने और उन पर अमल करने के लिए सभी हितधारकों को एक आम मंच पर लाना है और रीडिंग इको सिस्टम को बढ़ाने के लिए रचनात्मक और व्यवहार्य तरीकों का पता लगाना है।

आयोजन समिति आपको संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए भाग लेने और अपने बहुमूल्य मूल शोध पत्रों को इसमें योगदान देने के लिए सादर आमंत्रित करती है। हमें पूरी उम्मीद है कि आपकी सक्रिय भागीदारी और सहयोग संगोष्ठी और कार्यशाला के उद्देश्यों को प्राप्त करने में काफी मदद करेगा।

शुभकामनाओं सहित
प्रोफेसर ममता शर्मा
प्राचार्या
अदिति महाविद्यालय

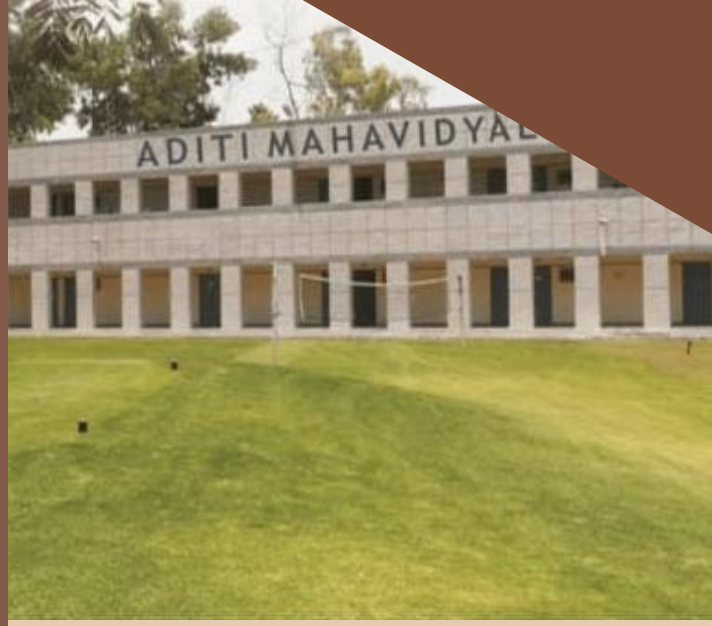

आयोजन समिति

पुस्तकालय समिति एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ
संरक्षक
प्रो.ममता शर्मा
प्राचार्या
अदिति महाविद्यालय

महत्वपूर्ण तिथियाँ

सार जमा करने की अंतिम तिथि: 18 मार्च, 2024, दोपहर 12 बजे
सार स्वीकृति की अधिसूचना: 18 मार्च, 2024, रात 11:59 तक
पूर्ण पेपर जमा करना: 20 मार्च, 2024 तक
पेपर प्रस्तुति के लिए पंजीकरण: 20 मार्च, 2024 तक
भागीदारी के लिए पंजीकरण: आयोजन स्थल पर
पंजीकरण: नि:शुल्क

संगोष्ठी के बारे में

प्राचीन काल में पुस्तकालय दुर्लभ पांडुलिपियों, भोजपत्र, ताम्रपत्र, धर्मग्रंथों, संधियों, शिलालेख, क्लासिक्स आदि के भंडारगृह हुआ करते थे। वास्तव में ऐसे संसाधन जंजीरों से बंधे होते थे और केवल राजघरानों और उच्च गणमान्य व्यक्तियों के लिए ही सुलभ होते थे। पुस्तकालयाध्यक्ष इन संसाधनों के संरक्षक थे। समय के साथ-साथ ज्ञान जगत का विकास और विस्तार हुआ। सभ्यताएँ ज्ञान की खोज में संलग्न होकर विकसित हुईं। कई नए विषय अस्तित्व में आए, जिससे वैज्ञानिक जांच और तकनीकी प्रगति हुई। परिणामस्वरूप प्रिंटिंग प्रेस के युग ने दुनिया भर में अपना विस्तार करना शुरू कर दिया। इससे पुस्तकों की कई प्रतियों में छपाई शुरू हो गई और ज्ञान तक पहुंच केवल कुलीनों और राजघरानों तक ही सीमित नहीं रही। आम जनता तक पुस्तकों के रूप में ज्ञान पहुंचाना संभव हो गया। इस प्रकार पुस्तकें सभी के लिए उपलब्ध हो गईं और लोगों के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान समकालिक और ऐतिहासिक रूप से होने लगा।

तकनीकी उन्नति और औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप पुस्तकालयों का स्वरूप बदलने लगा। वे अब भंडारगृह नहीं रहे और पुस्तकों के रूप में संसाधन आम जनता के लिए सुलभ हो गए। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पुस्तकालयों ने पुस्तकालय विज्ञान के पांच नियमों- डॉ. एस. आर. रंगनाथन द्वारा प्रस्तावित सिद्धांत की पुष्टि करना शुरू कर दिया।

ये नियम हैं:

- पुस्तकें उपयोग के लिए हैं।
- प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक उपलब्ध हो।
- प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले।
- पाठक का समय बचाये।
- पुस्तकालय एक बढ़ती हुई संस्था है।

सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के आधुनिक युग में हम देखते हैं कि सूचना विस्फोट हो रहा है। सूचना में तेजी से वृद्धि हो रही है। पुस्तकालय स्वचालन द्वारा खुद को बदल रहे हैं और पूरी तरह से डिजिटलीकृत हो रहे हैं। अब हम देखते हैं कि वर्चुअल लाइब्रेरी मल्टीमीडिया, एआई, मशीन लर्निंग, बिग डेटा आदि का उपयोग करके सामग्री निर्माण का गोदाम बन रही है।

पठनीयता फॉर्मूला का उपयोग करके पठनीयता के क्षेत्र में व्यापक शोध चल रहा है। वेब संसाधन इस प्रकार डिज़ाइन किए गए हैं कि पाठकों की पठनीयता और समझ सूचकांक एक अनुरूप हों। विषय विशिष्ट पठनीयता के हर पहलू का ध्यान रखा जाता है। हाल ही में कोविड-19 महामारी के दौरान आभासी पुस्तकालयों और ऑनलाइन संसाधनों ने उपयोगकर्ताओं की जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उपरोक्त परिदृश्य को देखते हुए पुस्तकें अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन्हें न केवल पढ़ना आसान है बल्कि कोई भी इनकी प्रामाणिकता एवं प्राधिकार पर भरोसा कर सकता है। इंटरनेट अप्रासंगिक संसाधनों से भरा है और उपयोगकर्ताओं के लिए अपनी ज़रूरत की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करना लगभग असंभव हो गया है। इस समस्या के समाधान के लिए एक संभावित समाधान यह हो सकता है कि किताबों और आभासी प्रामाणिक जानकारी सह दस्तावेजों को मिलाकर हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधनों का विकास किया जाए। ऐसे संसाधनों को विकसित करते समय सामग्री की पठनीयता पर अत्यधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

इस पृष्ठभूमि में, संगोष्ठी अपने मूल में सामग्री की पठनीयता को ध्यान में रखते हुए हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधनों को विकसित करने की वर्तमान और संभावित चुनौतियों का पता लगाने का प्रयास करता है। इसलिए इस संगोष्ठी का उद्देश्य 'हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधन और पठनीयता' पर व्यापक विचार-विमर्श के लिए शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं और प्रशासकों को साझा मंच प्रदान करना है।

संगोष्ठी के उद्देश्य

- हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधनों को विकसित करने में चुनौतियों को समझना और संभावित समाधान ढूंढना
- उपयोगकर्ताओं को हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधनों के बारे में जागरूक करने के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीतियों का पता लगाना
- पठनीयता से संबंधित मुद्दों का समाधान करना
- पठनीयता और पाठ्यक्रम के बीच संबंध स्थापित करना
- इंटरनेट से प्रासंगिक और प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के लिए नवीनतम एआई, मशीन लर्निंग और बिगडेटा को लागू करना

उप-विषय

महत्वपूर्ण उप-विषय जिन पर संगोष्ठी केंद्रित होगा, हालांकि केवल यहीं तक सीमित नहीं हैं, वे इस प्रकार हैं:

- हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधनों के विकास के अवसर और चुनौतियाँ
- हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधनों की रणनीतियों का प्रबंधन
- हाइब्रिड पुस्तकालय संसाधनों की अधिग्रहण रणनीतियाँ
- आधुनिक आईसीटी तकनीक और एआई, मशीन लर्निंग और बिगडेटा के उपयोग के साथ लाइब्रेरी इंटरफ़ेस
- एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में पठनीयता
- पाठ्यक्रम के साथ पठनीयता को एकीकृत करना
- पठनीयता और सामग्री निर्माण की अनुकूलता

अपेक्षित परिणाम

संगोष्ठी के अपेक्षित परिणाम इस प्रकार हैं:

- संगोष्ठी की सार पुस्तिका प्रकाशित की जा सकती है।
- एक नीति अनुशंसा तैयार की जा सकती है और आवश्यक कार्रवाई के लिए विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों को भेजी जा सकती है।

लक्ष्य समूह

संगोष्ठी के लक्षित समूह में पुस्तकालय अध्यक्ष, शिक्षाविद, शिक्षक, नीति निर्माता, शोधकर्ता, व्यवसायी, छात्र, कॉलेज संकाय और संगोष्ठी के विषय में रुचि रखने वाले सभी लोग शामिल हैं।

सार और पूर्ण पेपर प्रस्तुत करने का विवरण

सार: अधिकतम 500 शब्द
पूर्ण पेपर: अधिकतम 2000 शब्द
फ़ॉन्ट: मंगल (हिंदी प्रस्तुति के लिए)
टाइम्स रोमन (अंग्रेजी प्रस्तुति के लिए)
फ़ॉन्ट आकार: 12
सार और पेपर यहां भेजे:
library@aditi.du.ac.in
और
सीसी करें: **Punita@aditi.du.ac.in**

आयोजक टीम के सदस्य

समन्वयक:
डॉ. पुनीता गुप्ता- संयोजक पुस्तकालय समिति (9811744690)
श्री विजय कुमार- संस्थापक अध्यक्ष कथा मंच (95824 33087)

सह समन्वयक:
डॉ. पूनम यादव- सह संयोजक पुस्तकालय समिति
प्रो.रश्मि शर्मा- सदस्य पुस्तकालय समिति

टीम के सदस्य:
डॉ. संतोष कुमार
डॉ. नीरजा नागपाल
डॉ. अनीता बेनीवाल
डॉ. मनीष वत्स
डॉ. रितु खत्री
सुश्री अलका वर्मा
सुश्री मनीषा पाल
डॉ. राकेश चौधरी
पुस्तकालय कर्मचारी
छात्र स्वयंसेवक

National Seminar and Workshop on

Hybrid Library Resources and Readability: Challenges and Opportunities

20th and 21st March 2024

Organised by

Aditi Mahavidyalaya (University of Delhi) in collaboration with Katha Manch

Funded by Raja Rammohun Roy Library Foundation, Ministry of Culture

Invitation

It gives us immense pleasure to inform that library committee & IQAC, Aditi Mahavidyalaya, University of Delhi in collaboration with Katha Manch is organising a Two-Day National Seminar cum workshop on Hybrid Library Resources and Readability: Challenges and Opportunities on 20th & 21st March, 2024. The goal of the seminar is to bring all the stakeholders on a common platform to discuss and deliver upon the emerging concerns and to explore constructive and viable ways to enhance the reading eco system.

The organising committee cordially invites you to participate and contribute your valuable original research papers to the seminar in order to make it a successful one. We sincerely hope that your active participation and cooperation will go a long way in achieving the objectives of the seminar & workshop.

With regards

Prof Mamta Sharma

Principal

Aditi Mahavidyalaya

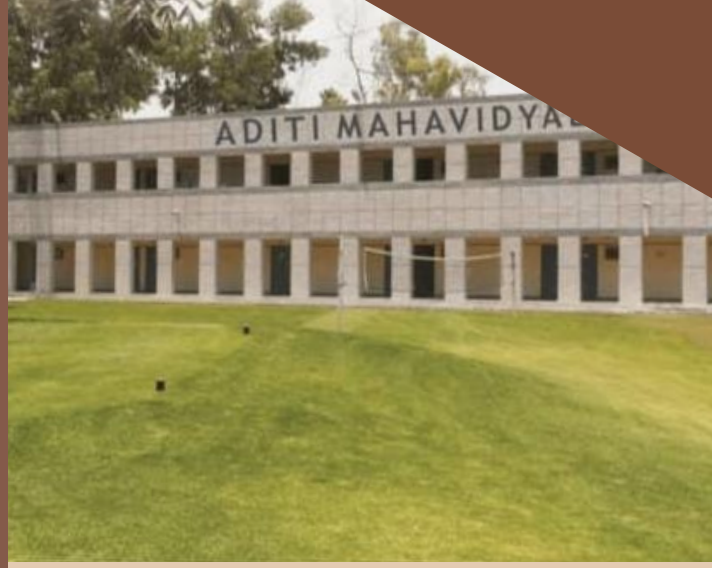

Organising Committee

Library Committee & IQAC

Patron

Prof Mamta Sharma

Principal

Aditi Mahavidyalaya

Important Dates

Last date of abstract submission: March 18, 2024, 12 noon

Notification of acceptance: March 18, 2024, 11:59 pm

Submission of full paper: Latest by 20th March, 2024

Registration for paper presentation: By 20th March, 2024

Registration for participation: On the spot

No registration fee

About the Seminar

During ancient times libraries used to be storehouses of rare manuscripts, bhojpatra, tamrapatra, scriptures, treaties, tablets, classics etc. In fact such resources were chained and were accessible to royals and high dignitaries only. Librarians were custodians of these resources. In due course of time there was evolution and expansion of universe of knowledge. Civilizations evolved by engaging itself in the pursuit of knowledge. Many new disciplines came into existence, which led to scientific enquiry and technological advancement. As a result era of printing press started expanding its tentacles across the globe. This led to printing of books in multiple copies and access to knowledge was not restricted to elites and royals only. It became possible to disseminate knowledge in the form of books to common masses. Thus books became available to all and exchange of knowledge among people synchronically and diachronically started taking place.

As a result of technological advancement and industrial revolution the nature of libraries started changing. They no longer remain a storehouse and resources in the form of books became accessible to common masses. It would not be exaggeration to say that libraries started confirming to the five laws of Library Science– theory proposed by Dr. S. R. Ranganathan.

These laws are :

- Books are for Use
- Every Reader His/Her Book
- Every Book Its Reader
- Save The Time of The Reader
- The Library is a growing organism

In the modern era of Information Communication Technology (ICT) we see information explosion is taking place. There is an exponential growth of information. The libraries are transforming themselves by automation and getting fully digitized. Now we find virtual libraries becoming warehouse of content generation using multimedia, AI, Machine Learning, Big Data etc. Extensive research in the field of readability using readability formula is going on. The web resources are so designed that readability and comprehension indexes of readers are in tune. Every aspects of subject specific readability are taken care off.

During the recent Covid-19 epidemic virtual libraries and online resources played an important role in catering to the users need.

Given the above scenario books still continues to play and important role. They are not only easy to read but also one can rely on their authenticity and authority. Internet is full of irrelevant resources and it becomes near impossible for users to dig out authentic information they need. In order to address this issue a possible solution may be to develop hybrid library resources amalgamating books and virtual authentic information cum documents.

Against this backdrop, the seminar attempts to explore the current and prospective challenges of developing hybrid library resources taking into account readability of content at its core. So the purpose of this seminar is to provide common platform for academician, policy makers, and administrators for comprehensive deliberation on ‘Hybrid Library Resources and Readability’.

Objectives of Seminar

- **To understand challenges in developing hybrid library resources and find possible solutions;**
- **To explore strategies used for making users aware of hybrid library resources;**
- **To address issues pertaining to readability;**
- **To establish a connect between readability and curriculum;**
- **To apply latest AI, Machine Learning and Bigdata in tapping relevant and authentic information from internet.**

The Target Group

The target group of the seminar consists of the librarians, academicians, educators, policy makers, researchers, practitioners, students, college faculty and anyone interested in theme of the seminar.

Sub-themes

The important sub-themes on which the seminar will focus, though not confined to are as follows:

- **Opportunities and challenges of developing hybrid library resources.**
- **Managing strategies of hybrid library resources.**
- **Acquisition strategies of hybrid library resources.**
- **Library interface with modern ICT technology and use of AI, Machine Learning and Bigdata**
- **Readability as a pedagogical tool**
- **Integrating readability with curriculum**
- **Compatibility of readability and content generation**

Expected Outcomes

The expected outcomes of the seminar are:

- **Abstract booklet of the seminar may be published.**
- **A policy recommendation may be prepared and sent to different government and nongovernment agencies for necessary action.**

Abstract and Full Paper Submission Details

Abstract: Maximum 500 words
Full paper: Maximum 2000 words
Font: Times Roman (for English submissions)
Mangal (for Hindi submissions)
Font size: 12
Abstracts and papers to be mailed at:
library@aditi.du.ac.in
and
Cc to: Punita@aditi.du.ac.in

Organising team members

Coordinators:
Dr. Punita Gupta- Convener Library Committee (9811744690)
Mr. Vijay Kumar- Founder chairperson Katha Manch (95824 33087)

Co coordinators:
Dr. Poonam Yadav- Co-Convener Library Committee
Prof. Rashmi Sharma- Member Library Committee

Team members:
Dr Santosh Kumar
Dr Neerja Nagpal
Dr Anita Beniwal
Dr Manish Vats
Dr Ritu Khatri
Ms Alka Verma
Ms Manisha Pal
Dr Rakesh Choudhary
Library staff
Student volunteers